International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय संस्कृति का प्रसार और प्राचीन भारतीय शिक्षा केन्द्र

अनिता पटेल

सहायक प्राध्यापक हिंदी, नवीन शासकीय महाविद्यालय कुसमुरा, जिला – रायगढ़ (छ,ग,)

सारांश

भारत की संस्कृति आरम्भ से सामासिक रही है । अनेकता में एकता हमारी संस्कृति का मूल आधार है ।

भारत की शैक्षणिक व सांस्कृतिक परपंरा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है । भारतवर्ष की सभ्यता व संस्कृति के प्रसार में यहाँ के रहवासियों के व्यापारिक यात्राओं, शिक्षा व धर्म के प्रसार के प्रति उत्साह एवं औपनिवेसिक प्रसार की लालसा की महती भूमिका रही । तत्कालीन भारतीय समाज में जड़ता या गतिहीनता की कोई बात नहीं थी । एक छोर से दूसरे छोर तक भारतीय संस्कृति उत्साह की लहरों से सराबोर थी ।

भारतीय समाज में शिक्षा का सदैव महत्वपूर्ण स्थान रहा है । सामाजिक विकास के साथ–साथ निरन्तर नवीन एवं सार्थक प्रयास किये गए । प्राचीन भारत को अध्यात्म, दर्शन व धर्म से आलोकित करने वाले प्रमुख शिक्षा केंद्र काशी, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि थे । ये शिक्षा केंद्र विश्व में ख्याति प्राप्त थे । हजारों की संख्या में देश विदेश के छात्र शिक्षा केन्द्रों में धर्म के अलावा व्याकरण, भाषा, दर्शन, योग, शिल्प, रसायन, ज्योतिष जैसे विषयों की शिक्षा पाते । इन केन्द्रों से शिक्षा प्राप्त गुणी विद्वानों ने भारतीय संस्कृति का प्रसार न केवल अपने देश में बल्कि विश्व के कोने–कोने में यात्राओं के दौरान किया ।

शिक्षा केन्द्रों का परम लक्ष्य सत्य का अन्वेषण कर विद्यार्थियों का नैतिक चारित्रिक विकास से उनको भावी जीवन के लिए तैयार करना रहा । वर्तमान में प्राचीन विद्या केंद्रो के भग्नावशेष उनकी उपस्थिति का आभास कराते हैं। भारतीय संस्कृति की उदारता व समन्वयवादी गुणों ने न केवल अन्य संस्कृतियों को समाहित किया वरन् अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा ।

बीज शब्द – भारतीय संस्कृति, सभ्यता, प्राचीन शिक्षा केंद्र, विश्वविद्यालय, विद्यार्थी।

विविधता में एकता भारतीय संस्कृति की गूढ़ विशेषता रही है। हमारे देश में अनेकानेक उपासना पद्धतियाँ, पंथ, दर्शन, जीवन–प्रणालियाँ, साहित्य और कलाओं का विकास हुआ जो भारतीय सांस्कृतिक सम्पन्नता की द्योतक है।

भारत की अध्यात्मिकएवं सांस्कृतिक मूल्यों को विशेषकर मध्य एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, चीन, जापान, कोरिया, म्यांमार(बर्मा), इंडोनेशिया, मलेशिया, आदि देशों ने सांस्कृतिक आदान–प्रदान के दौरान स्वेच्छा से स्वीकार किया।

संस्कृति आंतरिक गुणों का समूह है, जो व्यवहार से परिलक्षित होती है। यह प्रेरक शक्ति है जो हमें समाज में गतिशील रखती है। यही गतिशीलता ही समाज, संस्कृति एवं सभ्यता को जीवन प्रदान करने वाली प्राणवायु है। भारतीय संस्कृति का स्वरुप प्रारंभ से समन्वयवादी तथा लोककल्याणकारी रहा है। विश्व की सभी संस्कृतियाँ इसमें समाहित हो गयी।

हेथायआर्य, हेथाअनार्य, हेथाय द्रविड़ चीन,

शक हूणदल, पाठान–मोगल एक देहे हो लो लीन।

– गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर

भाव यह है – यहाँ आर्य भी आये, अनार्य भी आये, द्रविड़, चीनी, शक, हूण, पठान, मुगल सभी यहाँ आये, कोई भी अलग नहीं रहा। सब इस महासागर में विलीन होकर एक हो गए।[1]

भारतीय संस्कृति के प्रसार में निम्न की महती भूमिका रही–

1. **व्यापारियों की सांस्कृतिक दूत की भूमिका–**

भारतीय संस्कृति के प्रसार में भारतवंशियों के व्यापारिक यात्राओं ने अनुपम सहयोग प्रदान किया।[2] वे नए अवसर की खोज में अनेक देशों की यात्राओं पर गए। संम्राट अशोक के काल में कलिंग राज्य का श्रीलंका के साथ व्यापारिक सम्बन्ध था। जावा में बोरोबुदुर और कम्बोडिया में अंगकोर, दो भग्नावशेष हैं जो याद दिलाते हैं कि सभी पूर्वी एशिया देश एक समय भारत की सुगंध से सुगन्धित था।[3]

2. **धर्म प्रचारकोंकी सांस्कृतिक सेवकों की भूमिका**–

ऋषि मुनियों, संतो, बौद्ध धर्म प्रचारकों आदि ने त्याग व तपोमय जीवन व्यतीत करते हुए निस्पृह भाव से विभिन्न बाधाओं को पार करते हुए अपनी धार्मिक यात्राओं के बीच सम्पर्कित देशों के वासियों को धर्मोपदेश देकर जीवन जीने की कला सिखाते। ईसवी सन् की प्रथम शताब्दी में कश्यप, मातंग, धर्मरत्न आदि धर्म प्रचारक बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति का सन्देश लेकर खोतान से चीन में प्रविष्ट हुए। '' किताब सिंदबाद '' की रचना भारतीय कथाओं के आधार पर की गयी। जिन्हें हम आज अंतराष्ट्रीय अंक कहते हैं वे भारत से अरब गए तत्पश्चात यूरोप को मिले। अरबी में अभी भी अंको को ''हिन्दसा'' कहते हैं। इसका भी प्रमाण है कि भारत की प्रचलित कथाऐं जातक, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि प्राचीनकाल में देश के बाहर पहुँचती रही हैं।[4]

3. **औपनिवेशिक प्रसारकों की सांस्कृतिक पोषकों की भूमिका**–

भारतीय संम्राटों ने अपने साम्राज्य का विस्तार कर भारतीय संस्कृति व धर्म को समृद्धि की पराकाष्ठा तक पहुँचाया। संम्राट अशोक का साम्राज्य आज के सम्पूर्ण भारत के साथ अधिकांश पड़ोसी देशों की भू–भाग पर था। इन उपनिवेशों ने भारतीय संस्कृति व सभ्यता के प्रधान केन्द्रों के रूप में सफलता पाई।[5] आधुनिक अन्वेषणों से सिद्ध हो चुका है – फिलिपाइन द्वीप समूह में भी दक्षिण भारत के निवासियों द्वारा उपनिवेशों की स्थापना की गयी।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान में प्राचीन विश्वविद्यालयों की अत्यंत महती भूमिका रही है, जिसकी नींव पर आधुनिक जगत की विधाएँ बढ़ी हैं। कुछ प्राचीनकालीन महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय :–

1. **काशी विश्वविद्यालय**–

जगप्रसिद्ध काशी विश्वविद्यालय भारत की प्राचीन नगरी पापमोंचनी गंगानदी के उत्तर में स्थित उत्तरप्रदेश के वरुण व असी नदियों के संगम पर बसा है। यह वैदिक, बौद्ध व जैन धर्मो के प्रधान केंद्र थी। 9वीं शताब्दी में जगतगुरु शंकराचार्य जी ने अपने तप व ज्ञान से काशी को भारतीय संस्कृति तथा नवोदित आर्य धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण केंद्र बना दिया।[6]

तुलसीदास जी ने काशी की महिमा का वर्णनकरते हुए इसे सकल कामनाओं को पूरा करने वाली कामधेनु बताया है जो दुःख, क्लेश, पाप व रोगों का नाश करती है। काशी की यह सांस्कृतिक परंपरा आज तक चली आ रही है।

सेइय सहित सनेह देहभरि कामधेनु कलिकासी।।

समनि सोक, संताप–पाप रुज, सकल सुमंगल रासी।।

–विनय पत्रिका[7]

2. **नालंदा विश्वविद्यालय**–

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय 5वीं शताब्दी से लेकर 13वीं सदी तक उच्च शिक्षा के लिए दुनिया का प्रमुख केंद्र हुआ करता था। यहाँ 10000 छात्रों को पढ़ाने के लिए 2000 शिक्षक थे। चीनी यात्री व्हेन सांग 7वीं शताब्दी में विद्यार्थी व शिक्षक के रूप में अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष यहाँ व्यतीत किये। विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए कठिन परीक्षा चरणों से गुजरना पड़ता था। तिब्बत, चीन, जापान, कोरिया, जावा, सुमात्रा, श्रीलंका के छात्र विद्याअध्ययन हेतु यहाँ आते थे। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। व्याख्यान, बहस, व चर्चा शैक्षिक कार्यक्रम का हिस्सा थे। रत्नसागर, रत्ननिधि व रत्नरंजना नाम के तीन बड़े पुस्तकालय थे। इसमें से एक नौ मंजिला ऊंचा था। नालंदा भारत के सबसे शानदार बौद्ध सितारों की चमक से अभिभूत था। जिनमें नागार्जुन, धर्मपाल, सिलभद्र, धर्मकीर्ति आदि प्रमुख थे।[8]

3. **तक्षशिला विश्वविद्यालय**–

हिन्दू व बौद्ध धर्मो का महत्वपूर्ण केंद्र तक्षशिला विश्वविद्यालय प्राचीनतमविश्वविद्यालयों में एक था। जो रावलपिंडी से 18 मील दूर उत्तर में स्थित है। इसमें 10,500 से अधिक छात्र लगभग 60 विषयों को पढ़ते थे। वेद, वेदांत, अष्टादश, विधाएँ, दर्शन, अर्थशास्त्र, ज्योतिष जैसे विषयों की शिक्षा दी जाती थी। इस विश्वविद्यालय से पाणिनी, कौटिल्य (चाणक्य), चन्द्रगुप्त, प्रसेनजीत आदि महापुरुषों ने शिक्षा ग्रहण की।[9]

4. **विक्रमशिला विश्वविद्यालय**–

इस शिक्षा केंद्र में 160 विहार थे। सौ शिक्षकों की व्यवस्था थी। प्रसिद्ध पंडित अतिश दीपंकर यहाँ के आचार्य थे, तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार में इनकी महती भूमिका रही। विक्रमशिला में व्याकरण, न्याय, दर्शन व तंत्र की शिक्षा की विशेष व्यवस्था थी। वर्तमान में बिहार के भागलपुर जिले में स्थित है । विक्रमशिला विश्वविद्यालय से निकले विद्वानों की सूची बहुत लम्बी है – रक्षित, विरेचन, ज्ञानपाद, बुद्ध, रत्नवज्र, अभयंकर आदि–आदि ।

5. **तेल्हाड़ा विश्वविद्यालय**–

यह नालंदा व तक्षशिला विश्वविद्यालय से भी प्राचीन है। चीनी यात्री इत्सिंग ने अपने यात्रा वृतांत में इस विश्वविद्यालय का वर्णन किया है। यहाँ देश विदेश के सैकड़ों छात्र महायान की पढ़ाई करते थे।[10]

6. **वल्लभी विश्वविद्यालय**–

यह विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र व चिकित्सा हेतु प्रसिद्ध था। साथ ही बौद्ध धर्म के हीनयान शाखा का प्रमुख केंद्र था। शिक्षा के क्षेत्र में यह नालंदा का प्रतिद्वंदी माना जाता था। यह गुजरात में स्थित है। तत्कालीन समय में 600 से अधिक विद्यार्थी अध्ययनरत थे।

7. **पुष्पगिरी विश्वविद्यालय**–

इसकी स्थापना तीसरी शताब्दी में कलिंग राजाओं ने की थी ।11वीं शताब्दी तक शिक्षा के लिए विश्वविख्यात रहा। इस विश्वविद्यालय का परिसर ललितगिरी, रत्नगिरी व उदयगिरी तक फैला था।[11]

उपरोक्त शिक्षा केन्द्रों के अतिरिक्त औदंतपुर, शारदापीठ, सोमपुरा, श्रावस्ती, कन्नौज, कांची, कश्मीरभी महत्वपूर्ण रहे। कुछ अभी भी इतिहास के पन्नो में गुम हैं, तो कुछ शिक्षा केन्द्रों के भग्नावशेष उनके प्राचीन वैभव को दर्शाते हैं। इनकी शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, अध्यात्मिक और बौद्धिक विकास पर केन्द्रित थी। विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता तथा सभी कृतियों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर दिया जाता था। मानव और प्रकृति के बीच संतुलन की सराहना की सीख दी जाती थी।[12] प्राचीनकालीन आदर्शवादिता, गुरु शिष्य सम्बन्ध, शांत परिवेश, शिक्षण विधि, सरल जीवन वर्तमान काल में भी प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष– भारतीय संस्कृति व इसके प्रसार ने सारगर्भित भूमिका निभाने वाले शिक्षा केन्द्रों का योगदान अद्वितीय है। इसके संरक्षण की जिम्मेदारी वर्तमान पीढ़ी पर है, इसके प्रति गौरव का भाव लेकर चलना होगा। भारतीय संस्कृति समन्वय की विराट चेष्टा से पुलकित है। भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं का देश है परन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीनकाल से बना हुआ है। सर्वांगीणता, विशालता, उदारता, सहिष्णुता की दृष्टि से भारतीय संस्कृति विश्व में अग्रणी स्थान रखती है।

सन्दर्भ–सूची–

1- संस्कृति दृष्टि से भारत का वैश्विक प्रसार
http://ignited.in
2- bharat-discovery-org
3- "संस्कृति के चार अध्याय"– रामधारी सिंह दिनकर P–209
4- "संस्कृति के चार अध्याय"– रामधारी सिंह दिनकर P–201
5- bharatdiscovery-org
6- भारत के प्राचीन विश्वविद्यालय– hi-wikipedia.org
7- 'विनय पत्रिका'– तुलसीदास P–65

8- भारत के प्राचीन विश्वविद्यालय – hi-wikipedia.org
9- hi-wikipedia.org
10- hindi&news18.org
11- hindi-soopwoop.com
12- http://hi-m-wikipedia.org